14 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा स्वमान में रहने और

फरमान पर चलने का अनुभव

➢➢ सदा स्वमान में रहना...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहती हूँ...

→ मैं श्रेष्ठ भाग्यशाली आत्मा हूँ...

→ भाग्यविधाता बाप की संतान हूँ...

→ देवताओं से भी उंच भाग्य है मेरा...

→ सर्वशक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...

→ मैं बाबा के सर्व खजानों की अधिकारी हूँ...

→ मैं सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा हूँ...

→ स्वयं परमात्मा ही मेरा हो गया है तो उसके सारे गुण, शक्तियां सब मेरी ही हैं...

→ परमात्मा मेरा बाप, टीचर, सद्गुरु है...

→ स्वयं भगवान् मेरा साथी है, मेरा साजन है...

- वही मेरा सबकुछ है...
  - ▶ वही मेरा संसार है...

➳ _ ➳ स्वमान में स्थित होने से मैं आत्मा सदा विघ्न विनाशक स्थिति का अनुभव कर रही हूँ...

→ मन, वचन और कर्म तीनों में सदा स्वमान में रहती हूँ...

→ स्वमान में स्थित होने से सर्व प्रकार के अभिमानों से मैं स्वतः मुक्त हो रही हूँ-

- देह का अभिमान
- बुद्धि का अभिमान
- नाम का अभिमान
- सेवा का अभिमान
- विशेष गुणों का अभिमान

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा स्वमान में रहकर निर्मान रहती हूँ...

→ मुझ आत्मा को किसी भी बात का अभिमान नहीं है...

- मेरे गुण, मेरी विशेषतायें सबकुछ बाबा का ही दिया हुआ है...
  - ▶ तो अभिमान किसका...?

➳ _ ➳ अल्प काल के विनाशी मान का त्याग कर सारे कल्प में मान प्राप्त करने की अधिकारी बन रही हूँ...

→ मान लेने की इच्छा से परे होने से सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान स्वतः ही मिल रहा है...

→ मान के त्याग में सर्व के माननीय बनने का भाग्य प्राप्त हो रहा है...

→ मैं सदा माननीय और पूजनीय बन रही हूँ...

→ आधा कल्प अपने रॉयल राजाई परिवार द्वारा और प्रजा द्वारा...

→ और आधा कल्प भक्तों द्वारा मान प्राप्त हो रहा है...

- मैं आत्मा स्वमान में स्थित होकर निर्मान बन सर्व को सम्मान देती हूँ...
- सर्व को सहयोग देकर उमंग-उत्साह बढाती हूँ...
- सबको खुशियों का खजाना बाँट रही हूँ...
- पुण्यात्मा बन सारे कल्प के लिए श्रेष्ठ फल प्राप्त कर रही हूँ...
  - यह देना ही लेना है...

➢➢ सदा फरमान पर चल फरमानबरदार बनना...

➳ _ ➳ मैं आत्मा हर कदम बाप के फरमान पर चल रही हूँ...

→ सारा विश्व मुझ पर कुर्बान हो रहा है...

→ माया अपने वंश सहित कुर्बान हो रही है...

- मैं बाप पर कुर्बान जाती हूँ और माया मुझ पर कुर्बान जाती है...

→ मैं आत्मा सदा बाबा की छत्रछाया का अनुभव कर रही हूँ...

- बाप की छत्रछाया से अब माया की छाया का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है...
  - अब माया भी बार-बार वार करने से डरती है...
  - माया से बचने का सहज साधन है-बाप की फरमान पर चलना...

→ मैं आत्मा सदा बाबा के हर फरमान का पालन कर रही हूँ...

→ बाबा का श्रीमत रूपी हाथ सदा पकडे हुए रहती हूँ...

→ कोई भी विघ्न अब मुझे परेशान नहीं करते हैं...

- सहज ही विघ्नों से मुक्त हो रही हूँ...

→ जन्म-जन्मान्तर की मुश्किल से छूट गई हूँ...

- मैं आत्मा सहजयोगी होने का अनुभव कर रही हूँ...
- और भविष्य में सहज जीवन की अधिकारी बन रही हूँ...